

पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ०प्र०

राज्यपाल ने रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में आयोजित सेमिनार का उद्घाटन किया
रज़ा लाइब्रेरी रामपुर की पहचान है तथा उत्तर प्रदेश की शान है- राज्यपाल

दिनांक: 11 अक्टूबर, 2014

आज रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के सभागार हाँल, खयाबाने रज़ा में तीन दिवसीय सेमिनार विषय “मकतूबात एवं तज़किरे (13वीं से 19वीं शताब्दी) भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के स्रोत” का उद्घाटन माननीय श्री राम नाईक, राज्यपाल, उ०प्र० एवं रामपुर रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड के अध्यक्ष द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम का आधार व्याख्यान प्र० एम०ए० अलवी, अरबी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ द्वारा प्रस्तुत किया गया। राज्यपाल ने रामपुर रज़ा लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित पिछले वर्ष की अचीवमेंट रिपोर्ट का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि यह खुशी की बात है कि रिपोर्ट के माध्यम से सभी को पता लगेगा कि रज़ा लाइब्रेरी ने पिछले वर्ष क्या क्या उपलब्धियाँ प्राप्त की और भविष्य में रज़ा लाइब्रेरी द्वारा शोध के क्षेत्र में क्या क्या किया जायेगा।

राज्यपाल ने कहा कि 13वीं से 19वीं शताब्दी तक क्या क्या हुआ, इस अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार से शोधकर्ताओं एवं विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होंगी। देश के इतिहास का आंकलन सही तरीके से इतिहासकारों को करना चाहिये। 1857 को गदर के रूप देखना गलत है। वास्तव में 1857 में हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई की शुरुआत हुई थी। उन्होंने कहा कि रामपुर विद्वानों का शहर है तथा रामपुर रज़ा लाइब्रेरी जनपद की पहचान व उत्तर प्रदेश की शान है। रिजर्व बैंक देश के खजाने का भण्डार है, तो रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के पास ज्ञान का भण्डार है। उन्होंने यह भी कहा कि जब दुनिया के लोगों को कपड़े कैसे पहनना हैं इसका ज्ञान नहीं था, उस समय हमारे यहाँ के विद्वानों ने शब्दों को भाषा में पिरोकर ताड़पत्र पर लिखना आरम्भ कर दिया था। खुशी की बात यह है कि रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में 204 ताड़पत्र की पाण्डुलिपियों का खजाना संग्रहित हैं।

इस अवसर पर एम०ए० अलवी, अरबी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने अपना आधार व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए कहा कि अखवारूल अख्यार में 255 सूफियों और उलेमाओं का तजकरा है जिसके अनुसार हिन्दुस्तानी तारीख व सकाफत के बहुत से पहलू समाने आते हैं। उन्होंने बताया कि गुलबदन बेगम का हुमायूँनामा, जौहर आफताबची का तज़किरा तुल वाक्यात, ताजुल मासिर और अबुल फज़ल का अकबरनामा, आइने अकबरी, अब्दुल कादिर बदायूँनी का मुन्ताखब ए ताबारिख अकबर के समय के मूल्यवान तज़करें हैं। गुजरात, महाराष्ट्र, बंगाल, दक्कन अवध के उलेमा, सूफियों व उमरा के तज़करे अरबी और फारसी भाषा में लिखे गये। इन तज़किरें से उस समय की तारीख व संस्कृति को समझने में मदद मिलती है।

इस अवसर पर लाइब्रेरी के निदेशक प्र० एस०एम० अज़ीज़उद्दीन हुसैन ने कहा कि आज मलफूजात व मकतूबात के तज़किरे का जो खजाना मौजूद है वह लोगों को जोड़ने का काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि आजादी के 65 साल गुजरने के बाद भी जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जम्मू विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय आदि में अभी भी मकतूबात एवं तज़किरात का अध्ययन नहीं कराया जाता है। उन्होंने बताया कि रज़ा लाइब्रेरी ने पिछले साल इन विषयों पर एक सेमिनार का आयोजन करवाया था।

उद्घाटन सत्र के बाद श्री नाईक ने रामपुर रज़ा लाइब्रेरी का भ्रमण किया। इस अवसर पर राज्यपाल ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के चित्र पर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये। इसके बाद राज्यपाल ने हज़रत अली की

लिखी दुर्लभ कुरान शरीफ, वाल्मीकि रामायण, ताड़पत्र पर लिखित दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ इत्यादि का अवलोकन किया। साथ ही रज़ा लाइब्रेरी के भव्य दरबार हॉल में महात्मा गांधी पर लगाई प्रदर्शनी को भी देखा।

इस अवसर पर जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों सहित भारी संख्या में विद्वतजन भी उपस्थित थे।

अंजुम/ ललित/राजभवन



